अथ सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धप्रयोग ॥ श्राद्ध से एक दिन पहिले नियम करना ब्रह्मचर्य से रहना भोजन के लिये ब्राह्मण को निमन्त्रण देना ॥ १ ॥ श्राद्ध के दिन प्रातःकाल (वस्त्रोपवस्त्र) अर्थात् एक धोती और एक अंग पोछने का वस्त्र सहित स्नान

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धप्रयोगः ॥ तत्र पूर्वदिने कृतनियमः ॥ १ ॥ श्राद्धदिने प्रातर्वस्त्रयुग्मेन कृतस्नानः ॥ २ ॥ पंचगव्योपलेपनं ज्वलदंगारभ्रमणगौरमृत्तिकाच्छादनैः श्राद्धभूमिसंस्कारं कृत्वा वस्त्रादिना वेष्टयित्वा तिलगौरसर्षपरवकीर्य पित्रासनस्थानाद्वाममागे श्राद्धदेयवस्तून्यासाद्य ॥ ३ ॥ कृतस्नानादिर्मध्यान्हे शुचिः शुक्लद्विवासः पादौ प्रक्षाल्याचम्य श्राद्धदेशमागच्छेत् ॥४॥ तत्र स्वयं पाकं कुर्यात् सपिण्डं स्त्रीद्वारा वा पाचयेत् ततः पाके वृत्ते रक्षादीपं निधाय

करना ॥ २ ॥ जहाँ श्राद्ध करना हो उस भूमि को अग्नि से शुद्ध करके उस पर पंचगव्य सहित पीली मिट्टी से लीपके और वहा कनात अथवा चटाई आदि से आड़ करके तब मध्यान्ह में उसी क्रम से स्नान करके श्राद्ध करना तिल और पीली सरसों छीट देना पितृ के आसन से वामभाग में श्राद्ध सामग्री रखना ॥ ३ ॥ शुद्ध सफेद वस्त्रोपवस्त्र पहिन ओढ़ कर हाथ पैर धोके आचमन

प्राणायाम करना ॥ ४ ॥ फिर अपने हाथ से अथवा अपनी स्त्री या भाई आदि से पिण्ड के लिये पाक बनवाना ॥ पाक करने के बाद रक्षा दीप बालना फिर आचमन करके पूरब मुँह बैठ कर जिसने पाक बनाया होय उससे पूछना कि पाक भया ? ॥ ५ ॥

पुनराचम्य प्राङ्मुखउपविशेत् अन्यकृतेपाके सिद्धमिति पाचिकां पृष्ट्वा ॥ ५ ॥ ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा । यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥ ॐ पुंडरीकाक्षः पुनात्विति पठित्वा कुशत्रयजलैः आद्रव्यस्तून्यभिषिंचेत् ॥ ६ ॥ ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॐ अद्यामुकमासीयामुकपक्षीयामुकतिथौ अमुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धमहं करिष्ये इतिसंकल्पं कुर्यात् ॥ ततो गायत्रीं त्रिर्जपित्वा ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च ॥ नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः इति त्रिर्जपेत् ॥ ७ ॥ ततोऽपसव्यं कृत्वा दक्षिणामुखः

फिर अपवित्र० इस मन्त्र से त्रिकुश जल में वोर के श्राद्ध की समग्री पर छिडके ॥ ६ ॥ त्रिकुश तिल जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प कर ३ वार गायत्री और देवताभ्य० मन्त्र को पढे ॥ ७ ॥ फिर अपसव्य होके दक्षिण मुख बैठकर बाया पैर मोडके मोटक तिल

जल लेकर संकल्प करके पलास के तिपातिया पातया पर दक्षिणाग्र दोहरे कुशका मोटक रूप आसन दे ॥ ८ ॥ फिर अपहता०

पातितवामजानुर्मोटकादीन्यादाय ॐ अद्यामुकगोत्रपितरामुकशर्मन् सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे इदमासनं ते स्वधेति पूर्वोपकल्पितं मोटकरूपमासनं तिलजलप्रोक्षितं दक्षिणाग्रं पितृतीर्थेनोत्सृजेत् ॥ ८ ॥ ॐ अपहताअसुरारक्षा ँ सिवेदिषदः इति भोजनपात्रे तिलान्विकीर्य ॐ आयंतु नः पितरः सोम्यासोग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः ॥ अस्मिन्यज्ञे स्वधयामदंतोधिब्रुवंतुतेवंत्वस्मानितिपठित्वा ॥ ६ ॥ ततोऽर्घ्यकरणम् पुटकादौ दक्षिणाग्रं पवित्रं धृत्वा ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपो भवंतु पीतये । शंय्योरभिस्रवतुन इतिमन्त्रेण जलं प्रक्षिप्य ॐ तिलोसिसोमदेवत्योगोसवोदेवनिर्मितः । प्रत्न-

मन्त्र से आसन के आगे अर्थात् आसन से उत्तर रखे हुए भोजनपात्र पर तिल छोडना आयन्तुन.० मन्त्र पढ़ देना ॥ ९ ॥ तब अर्घ्य के वास्ते १ पात्र रखना उसमें शन्नोदेवी० मन्त्र से जल छोड़ना तिलोसि० मन्त्र से तिल छोड़ना और बिना मन्त्र के गन्ध

पुष्प छोड़ना । फिर उसी अर्घ्यपात्र मे २ पत्ती कुशा ग्रन्थि देकर दाक्षिणाग्र धरना ॥ १० ॥ फिर उसको बायें हाथ में लेना उस में से पवित्री निकाल के भोजनपात्र पर उत्तर आगा करके रखना उसके ऊपर १ आचमनी जल छोड़ना फिर अर्घ्य-

मद्भिः पृक्तः स्वधयापितॄन्लोकान्प्रीणाहिनः स्वाहा इति तिलान् प्रक्षिप्य गंधपुष्पे तूष्णीं क्षिपेत् ॥ १० ॥ ततोऽर्घ्यपात्रं वामहस्ते कृत्वा भोजनपात्रे पवित्रमुत्तराग्रं धृत्वा तदुपरि किंचिदुदकान्तरं दत्त्वा ॐ यादिव्या आपः पयसासंबभूवुर्याऽआंतरिक्षाउत्पार्थिवीर्याः हिरण्यवर्णायज्ञियास्तान आपः शिवाः स ँ स्योनासुहवाभवन्तु इति पठित्वा ॐ अद्यामुकगोत्रपितरमुकशर्मन् सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे एष ते हस्तार्घ्यः स्वधेति पवित्रोपरि जलं यथापतितमेव-

पात्र को बायें हाथ में जो रखा है दाहिने हाथ से ढाकना यादिव्या० मन्त्र पढ़ना और संकल्प करके आधा जल अर्घ्य का भोजनपात्र पर रखी हुई पवित्री पर छोड़ना पवित्री उठाय के अर्घ्यपात्र में फिर रख कर अर्घ्यपात्र को मोटक रूप आसन जो पहिले से रखा है उसके पूरब वाम भाग में उलट के

रखदेना । दक्षिणा दान के समय तक उसको उठाना नहीं ॥ ११ ॥ फिर मोटकरूप आसन पर चन्दन फूल धूप दीप पान
सुपारी वस्त्रोपवस्त्र यज्ञोपवीत चढ़ाना मोटक तिल जल लेकर गन्धादि दान करना ॥ १२ ॥ पश्चात् जल से आसन

मुत्सृजेत् ततः पवित्रयुतं तदर्घ्यपात्रमवशिष्टजलयुतमेवासनवामभागे ॐ पित्रे-
स्थानमसीति न्युब्जीकुर्यात् दक्षिणादानपर्यन्तं नोद्धरेत् न चालयेत ॥ ११ ॥
ततो गंधादिदद्यात् ततो मोटकतिलजलान्यादाय ॐ अद्यामुकगोत्रपितरमुकश-
र्मन् सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे एतानि गंधपुष्पधूपदीपतांबूलयज्ञोपवीतवासांसि ते
स्वधेति गंधादीन् दद्यात् ॥ १२ ॥ ततो जलेन भोजनपात्रासनयोश्चतुर्दिशं मंडलं
कृत्वा सव्यंजनं सघृततिलजलमन्नं किंचिदग्रभागमुद्धृत्य मोटकादिना ॐ इदमन्नमेतत्
भूस्वामिपितृभ्यो नमः इतिभूस्वामिनेऽन्नं दद्यात् ॥ १३ ॥ ततः सिद्धमुष्णमन्नं रज-

सहित भोजनपात्र का (मण्डल) अर्थात् घेरा करना आगे भाजी सहित घृत तिल जल और पाकान्न थोड़ा दोनियाँ में
लेकर भूस्वामि को लिखे वाक्य से देना ॥ १३ ॥ फिर पाकान्न चाँदी आदि के पात्र में रख के पितरका ध्यान करके थोड़ा

गरम २ पुरुष के भोजन माफिक परोसे साग भाजी घृत मीठा इत्यादि उत्तम २ पदार्थ और एक पात्र में जल परोसे मधुव्वाता०

तादिपात्रस्थं कराभ्यामादाय पितरं ध्यायन् मंदं मंदं परिवेषणं कुर्यात् ततः पुरुषाहार-
त्वममन्नं परिविश्य यथासंभवं व्यंजनमन्नं जलं घृतं च पात्रांतरस्थं तत्रोपनीय अन्नं
मधुनाभिघार्य ॐ मधुव्वाताऋतायते मधुक्षरंतिसिंधवः। माध्वीर्न्नः संत्वौषधीः ॥१॥
मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिवँ रजः। मधुद्यौरस्तुनः पिता ॥२॥ मधुमान्नोवनस्पति-
र्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावोभवंतुन इतित्र्यृचंमधुमधुमध्वितिचजपित्वा॥१४॥
पात्रमालभेत् ततः सव्येन हस्तेन पात्रं पश्चिमभागे स्पृशन् तदुपरि गतदक्षिण-
हस्तेनाधोमुखेन पूर्वभागे पात्रं स्पृशन् ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य
मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदं ॥

मन्त्रों से मधु पाकान्न पर छोडे ॥१४॥ फिर-बायाँ हाथ नीचे दहिना ऊपर करके भोजनपात्र को स्पर्श कर पृथ्वी ते पात्रं० इत्यादि

मंन्त्र पाठ करै फिर बायां हाथ लगाये रहे दहिने हाथ के अँगूठा से अन्न जल घृत आदि देखावै अपहता ० मन्त्र से भोजनपात्र

समूढमस्यपा ँ सुरे इतिपठित्वा ॐ कृष्णाकव्यमिदंरक्षमदीयमितिपठित्वा वामेन पाणिना पात्रं स्पृशन्नेव दक्षिणपाणिमुद्धृत्य ॐ इदमन्नं ॐ इमाआपः ॐ इदमाज्यं ॐ इदं हविरित्यन्ने जलं घृते पुनरन्ने चांगुष्ठं निक्षिप्य ॐ अपहता असुरारक्षा ँ सिवेदिषदइत्यन्नोपरितिलान्विकीर्य्य मोटकतिलजलान्यादाय ॐ अद्यामुकगोत्रपितरम-मुकशर्मन्सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे एतत्तेन्नंसोपकरणंस्वधेत्युत्सृजेत् ततोवामहस्तमप्युद्धृत्य ॐ अन्नहीनंक्रियाहीनंविधिहीनंचयद्भवेत् । तत्सर्वमच्छिद्रमस्त्वितिपठित्वा ॥१५॥ ॐ गायत्रींचत्रिर्जपेत् ततः कुशेषूपविश्य ॐ मधुवातेत्यादिजपेत् ततः ॐ कृणुष्व-पाजः ँ प्रसितिन्नपृथ्वीं याहिराजेवामवा इभेन । तृष्वीमनुप्रसितिंद्रूणानोस्तासि

पर तिल छाड़ै मोटक तिल जल लेके अन्न आदि दान करै अन्नहीन० मन्त्र पढके क्षमा मांगै ॥ १५ ॥ सव्य होके पूरब मुख

कुशासन पर बैठ के ३ वार गायत्री मधुव्वाता० ३ मन्त्र कृणुष्वापाजः० मन्त्र पाठ करके भूमि मे तिल छोडै पितर का ध्यान करै

विध्यरक्षसस्तपिष्टैः इतिरक्षोघ्नीऋचोजपित्वाभूमौतिलान्विकीर्यपितरंध्यात्वा ॥१६॥
ॐ उदीरतामवरउत्परासउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुंयईयुरवृकाऋतज्ञास्तेनोवं
तुपितरोहवेषु इति पितृ मंत्रान् ॐ सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। सभूमि
सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशांगुलमिति पुरुषसूक्तं ॐ आशुःशिशानोवृषभोनभीमोघनाघनः
क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रंदनोनिमिषऽएकवीरः शतः सेनाअजयत्साकमिन्द्रइत्य
प्रतिरथंच जपेत् यथाशक्त्यान्यान्यपि पवित्राणिजपेत् रुचिस्तवादीनचजपेत् ॐ
नमस्तुभ्यंविरूपाक्षनमस्तेनेकचक्षुषे। नमःपिनाकहस्तायवज्रहस्ताय वै नमः ॥१७॥
इति पठित्वा। उच्छिष्टसमीपेदक्षिणाग्रंकुशत्रयमास्तीर्य जलेनसिक्त्वा किंचिदन्नं सघृत-

॥ १६ ॥ फिर उदीरता० इत्यादि पितृमत्र पुरुषसूक्तादि पवित्र पाठ करना ॥ १७ ॥ भोजनपात्र के पास दक्खिन आगा करके ३

कुशा अपसव्य होके बिछाना उस पर जल छींटना सव्य होके १ पात्र मे थोड़ा अन्न घृत तिल जल सहित लेकर अनग्निदग्ध.०: मन्त्र स तीनो कुशा पर गिराय देना ॥१८॥ सव्यहो आचमन करके विष्णु का स्मरण कर गायत्री मधुव्वाता० ३ मन्त्र पढना ॥१९॥

तिलजलसिक्तमादाय अपसव्यं० ॐ अनग्निदग्धाः येजीवाः येप्यदग्धाः कुलेमम । भूमौदत्तेनतृप्यंतुतृप्तायांतुपरांगतिं॥इतिमन्त्रस्थंफलमुद्दिश्य कुशोपरिअन्नं विकिरेत्॥ १८॥ ततः सव्यं कृत्वाचम्य हरिं स्मृत्वा गायत्री मधुव्वाता इत्यादिकं मधुमधुमधिति च जपेत् ॥ १९ ॥ ततोऽपसव्यं कृत्वा हस्तमात्र चतुरंगुलोच्छ्रितदक्षिणप्लवां पिंडिकायां प्रादेशमात्रं परिमाय दर्भपिंजूल्या दक्षिणांगुष्ठतर्ज्जनीधृतमूलया वामहस्तांगुष्ठतर्ज्जनीधृतोपरि भागया ॐ अपहताऽसुरारक्षां सिवेदिषद इति प्रादेशमात्रमुल्लिख्य

फिर अपसव्य होके १ हाथ की वेदी ४ अंगुल ऊँची दक्खिन तरफ कुछ ढार रहे ऐसी वेदी बनावे उस पर १ कुशा लेकर दहिना हाथ नीचे बायां हाथ ऊपर करके (प्रादेशमात्र) अर्थात् अंगूठा और अंगूठे के पासवाली अंगुली फैलाने में जो स्थान आवे उसीको प्रादेश कहते हैं इतनी ही लम्बी अपहता० मन्त्र को पढके २ रेखा कुशा से वेदी पर करना उस कुशा को उत्तर दिशा मे फेंक देना.

॥ २० ॥ ये रूपाणि० मन्त्र से जलती हुई लकड़ी वेदीपर घुमाय के दक्खिन दिशा में फेंक देना ॥ २१ ॥ फिर ३ कुशा जिसकी जड़ कटी हो उसको वेदी पर बिछाना और सव्य होके देवताभ्यः मन्त्र ३ बार जपना ॥ २२ ॥ फिर अपसव्य होके तिल जल

दर्भपिंजुलीमुत्तरस्यां दिशि त्यजेत् ॥ २० ॥ ॐ येरूपाणिप्रतिमुंचमानाअसुराः संतः स्वधयाचरंति । परापुरोनिपुरोयेभरंत्यग्निष्टांल्लोकान्प्रणुदात्वस्मान् इत्यंगारं भ्रामयित्वा अंगारं दक्षिणस्यां दिशि क्षिपेत् ॥ २१ ॥ ततस्तत्र छिन्नमूलकुशत्रयमास्तीर्य सव्यं कृत्वा देवताभ्य इति त्रिर्जपेत् ॥ २२ ॥ तत अपसव्यं कृत्वा तिलजलगंधपुष्पाणि पुटकं कृत्वा पुटकं वामहस्ते धृत्वा मोटकतिलजलान्यादाय ॐ अद्यामुकगोत्र-पितरममुकशर्मन् सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धपिण्डस्थानेऽत्रावनेनिक्ष्व ते स्वधेति छिन्नमूलकुशोपरि अवनेजनं दद्यात् किंचिज्जलं पुटके अवशेषयेत् ॥ २३ ॥

गन्ध पुष्प १ दोनियां में रखना । मोटक तिल जल लेकर संकल्प करके दोनियां का आधा जल वेदी पर बिछे हुये कुश पर

छोड़ना॥ शेष जल सहित दोनिया रख देना ॥ २३ ॥ फिर तिल जल भाजी आदि घृत मिलाय के बेल के समान पिण्ड बनाय के ऊपर पिण्ड के मधु घृत लगाय के मोटक तिल जल सहित दहिने हाथ में बाए हाथ से पिण्ड रख सकल्प करके वेदी के कुशा

ततः तिलजलव्यंजनघृतमिश्रैरन्नैः पिण्डं बिल्वोपमं निर्माय्य मधुघृताभ्यामभिधार्य मोटकतिलजलसहितमादाय सव्योपगृहीतदक्षिणहस्तेन ॐ अद्यामुकगोत्रपितरमुकशर्मन्सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे एष ते पिण्डः स्वधेति छिन्नमूलकुशोपरि पिण्डं दद्यात् ततः कुशमूलेतूष्णीं करं प्रोञ्छ्य ॥ २४ ॥ सव्यं कृत्वा द्विराचमेत् हरिं स्मृत्वा ॥ २५ ॥ अपसव्यं कृत्वा दक्षिणाभिमुखः ॐ अत्र पितर्मादयस्व यथाभागमावृषायस्वेति पठित्वा उत्तराभिमुखीभूय श्वासं नियम्य पितरं ध्या-

पर धरना कुश के जड़ में हाथ पोंछ देना ॥ २४ ॥ सव्य होके २ आचमन करके हरिका स्मरण करना ॥ २५ ॥ अपसव्य हो क अत्र पितर० मन्त्र से उत्तर मुख हो के श्वास खींच कर पितर का ध्यान करके फिर दक्षिण मुख होके अमीमदन्त० मन्त्र से

पिण्ड की तरफ जल छोड़े ॥ २६ ॥ तब फिर सव्य करके वेदी पर उसी दोनियां का आधा बचा हुआ जल छोड़ना पहिले उसी जलका अवनेजन पीछे अर्घ शेष जलको प्रत्यवनेजन कहते हैं ॥ २७ ॥ फिर कमर के धोती की मुर्री ढीली करना सव्य

यन् पुनर्दक्षिणाभिमुखो भवन् ॐ अमीमदन्त पितर्यथा भागमावृषायिष्टेतिपठेत् ॥ ॥ २६ ॥ ततः पूर्वदत्तावशिष्टजलयुतं प्रत्यवनेजनजलपात्रमादाय ॐ अद्यामुकगोत्र-पितरममुकशर्मन् सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धपिण्डेऽत्रप्रत्यवनेनिक्ष्वतेस्वधेतिपिण्डोपरि प्रत्यवनेजनं दद्यात् ॥ २७ ॥ ततो नीवीं विस्रंस्य सव्येनाचम्य ॥ २८ ॥ अपसव्यं कृत्वा वामेन पाणिना सूत्रमादाय दक्षिणकरेण धृत्वा ओं नमस्ते पिता रसाय नमस्ते पितः शोषाय नमस्ते पितर्जीवाय नमस्ते पितः स्वधाय नमस्ते पितर्घोराय नमस्ते पितर्मन्यवे नमस्ते पितः पितर्नमस्ते गृहान्नः पितर्देहि सतरते पितर्देष्म इतिपठित्वा

होके आचमन करना ॥ २८ ॥ अपसव्य होके बाये हाथ से सूत उठाय के दहिने हाथ में लेना नमो व० मन्त्र से एतरो पितर-

मोटक तिल जल लेकर सूत्र दान करना ॥ २९ ॥ फिर पिण्डपर बिना मन्त्र पढे
वासः वाक्य कहके पिण्ड पर सूत चढादेना मोटक आदि लेकर
चन्दन फूल धूप दीप ताम्बूलादि चढाना और भोजन पात्र पर १ आचमनी जल और अक्षत छोडना

ॐ एतत्ते पितर्वास इति पिंडोपरि सूत्रं दद्यात् ततो मोटकतिलजलान्यादाय ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकशर्मन्सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धपिंडे एतत्ते वासः स्वधेति सूत्रमुत्सृजेत् ॥ २९ ॥ ततः पितरमुद्दिश्य पिंडेतूष्णीं गंधपुष्पधूपदीपतांबूलानिदद्यात् ततः ॐ शिवाआपःसंत्विति जलं ॐ सौमनस्यमस्त्विति पुष्पम् ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्त्विति तंडुलान्भोजनपात्रे क्षिपेत् ततश्च मोटकतिलजलान्यादाय ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठतामित्यक्षय्योदकं दद्यात ॥ ३० ॥ ततः सव्यं कृत्वा दक्षिणाभिमुखः ॐ अघोरः

पश्चिम से पूरब को पिण्ड पर जलधारा देना फिर पूरब मुख
संकल्प छोट देना ॥ ३० ॥ तब सव्य होके दक्खिन मुख बैठ कर

करके दोनों हाथ से अँजुली बाँध कर गोत्रन्नो० मन्त्र पढ़के आशीर्वाद लेना ॥ ३१ ॥ पुनः अपसव्य होके पवित्री सहित ३ कुशा दक्खिन आगा करके पिण्ड पर ऊर्जंवहन्ती मन्त्र मे उत्तर से दक्खिन को पिण्ड पर जलधारा देना और झुक के पिण्ड को सूंघ

पितास्स्वति पिण्डोपरि पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात् ततः पूर्वाभिमुखः कृतांजलिः सुमनाः ॐ गोत्रं नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्तां वेदाः संततिरेव च श्रद्धा च नो माव्यगमद्बहुदेयं च नोऽस्तु अन्नं च नो वहुभवेदतिथींश्च लभेमहि याचितारश्च नः संतु माचयाचिष्म कचन एताः सत्याआशिषः संतु इत्याशीः प्रार्थनां कृत्वा ॥ ३१ ॥ अपसव्यं कृत्वा सपवित्रकुशात्रयं दक्षिणाग्रंपिण्डोपरिधृत्वा ॐ ऊर्ज्जंव्वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतं ॥ स्वधास्थ तर्पयत मे पितरइतिमन्त्रेण कुशोपरि दक्षिणाग्रां जलधारां दद्यात् ततो नम्रीभूय पिंडमाघ्रायोत्थापयेत् पिण्डाधारकुशा-नुल्मुकं च वन्हौ क्षिपेत् ॥ ३२ ॥ अर्घ्यपात्रमुत्तानीकृत्य दक्षिणां दद्यात्तथा मोट-

के उठाय लेना पिण्ड के नीचे की कुशा जलती हुई अग्नि में छोडदेना ॥ ३२ ॥ अर्घ्यपात्र जो आसन के पीछे उलटे रक्खे हैं

उसको सीधा कर देना मोटकादि लेकर सकल्प करके दक्षिणा चाँदी की देना ॥ ३३ ॥ फिर ओंकारपूर्वक अभिरम्यतां० वाक्य से विसर्जन करना ॥ ३४ ॥ तब फिर सव्य होके देवताभ्यः मन्त्र ३ बार जपना ॥ ३५ ॥ अपसव्य होके रक्षा दीप बुताय

कादीन्यादाय रजतं च ओं अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः कृतैतत्सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं रजतं चंद्रदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे यद्युपस्थितं रजतं न भवति तदा रक्तिकामितं रजतं चंद्रदैवतमित्येवमादिवाक्यं कर्तव्यं इदं पदं न दातव्यमिति शेषः ॥ ३३ ॥ ततः ओं अभिरम्यतामिति विसर्जनम् ॥ ३४ ॥ ततः सव्यं कृत्वा ओं देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च । नमः स्वाहायै स्वधायैनित्यमेव नमो नमः ॥ इति त्रिः पठेत् ॥ ३५ ॥ ततोऽपसव्यं कृत्वा पाणिभ्यां दीपं निर्वापयेत् ततो हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य सव्यं कृत्वाचम्य प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् । स्मरणादेवतद्विष्णोःसंपूर्णस्यादितिश्रुतिः ॥ ३६ ॥

देना हाथ पैर धोके फिर सव्यहोके प्रमादात् इत्यादि मन्त्र पढके परमात्मा का स्मरण करना ॥ ३६ ॥ इसी प्रकार से माता

अथवा स्त्री आदिका एकोद्दिष्टश्राद्धकरै और स्त्रीका अपने पति, अथवा पुत्रादिको एकोद्दिष्टश्राद्धभी इसी विधिसे करना होगा ॥

इति एकोद्दिष्टश्राद्धप्रयोगः ॥

इति श्रीरुद्रधरकृतश्राद्धविवेके सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धप्रयोगः ॥

अथ बलिवैश्वदेव प्रयोगः। ओं ब्रह्मणे स्वाहा ओं प्रजापतये० ओंगृह्याभ्यः० ओंकश्यपाय० ओंअनुमतये० ॥ १ ॥ ततो हुतशेषान्नेनबलिदानं ओं पर्ज्जन्याय नमः ओंअद्भ्यो नमः ओं पृथिव्य नमः उदकमंस्थ ॥ २ ॥ ओं धात्रे नमः ओं विधात्रे नमः द्वारशाखयोः ॥ ३ ॥ ओं वायवे नमः इति प्रतिदिशे ॥ ४ ॥ ओं 'प्राच्यै नमःओं अवाच्यै नमःओं प्रतीच्यै नमःओं उदीच्यै नमःॐब्रह्मणे नमःओं अंतरिक्षाय०ॐ

अथ बलिवैश्वदेवप्रयोग । अग्नि में ॐ ब्रह्मणेस्वाहादि पांच आहुति दे ॥१॥ फिर होम से बचा हुआ अन्न का बलिदान दे ॐ पर्ज्जन्याय नमः आदि ३ मंत्र से जल में दे ॥ २ ॥ धात्रे नम. १ विधात्र नमः २ से चक्र के द्वार शाखा के पास दे ॥३॥ ॐ वायवे नमः से चारो दिशा मे दे ॥ ४ ॥ ॐ प्राच्यै नमः इत्यादि ७ मन्त्र से बीच में दे ॥ ५ ॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नम.

आदि ४ मन्त्र से चक्रमध्य में उत्तर फिर उसके उत्तर क्रम से दे ॥ ६ ॥ फिर बायां पैर मोड के (पितृतीर्थ) अर्थात्
अंगुठा और अंगुली के बीच से दाक्खिन मुख होके दक्खिन दिशा में दे ॐ पितृभ्य स्वधा नमः इसी एक मंत्र से फिर ॥ ७ ॥

सूर्य्याय०इतिमध्ये॥५॥ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमःओं विश्वेभ्यो भूतेभ्यो नमःओं उषसे नमःओं भूतानां च पतये नमः इत्युत्तरोत्तरं ॥६॥ ततः प्राचीनावीती दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुः पितृतीर्थेन दक्षिणस्यां दिशि ओं पितृभ्यः स्वधा नमःइतिदद्यात्७ ततो बलिशेषान्नलिप्तपात्रं प्रक्षाल्य ओं यक्ष्मैतत्ते निर्णेजनं नमः इतिवायव्यां दिशि दद्यात् ॥ ८ ॥ ओं देवा मनुष्याः पशवो वयांसि सिद्धाः सयक्षोरगदैत्यसंघाः । प्रेता पिशाचास्तरवः समस्ता ये चान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तं ॥१॥ पिपीलकाः कीटपतंगकाश्च बुभुक्षिताः कर्मनिबद्ध बद्धाः । प्रयान्तु ते तृप्तिमिदं मयान्नं तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो

बलि से बचा अन्न जिस पात्र में हो उस पात्र को धोय के ॐ यक्ष्मै तत्ते निर्णेजन नमः इस मन्त्र से वायु कोण में दे ॥ ८ ॥
देवा मनुष्याः इत्यादि मन्त्रों से ३ और सौरभेय्य मन्त्र से गौको १ द्वौं श्वानौ से कुत्ते को २ ऐन्द्र वारुण से कौवों को ३

बलि दे ॥ ९ ॥ फिर ब्राह्मण भोजन करावै ॥ १० ॥ यह नैमित्तिक श्राद्ध बलिदान है ॥ विष्णु का स्मरण करै ॥ ११ ॥ श्राद्ध

भवंतु ॥ २॥ येषान्न माता न पिता न बन्धुर्न चान्नसिद्धिर्न तथान्नमस्ति। तत्तृप्तयेन्नं भुवि दत्तमेतत्तेषान्तु तृप्तिर्मुदिता भवन्तु ॥ ३ ॥ शंखः। सौरभेय्य इतिगोभ्यस्ततःद्वो श्वानाविति शुनां ऐन्द्रेति वायसानां च शनैर्निर्वर्तयेद्भुवि ॥ ९ ॥ ततो ब्राह्मणान्भो-जयेत् ॥१०॥ इतिनैमित्तिकश्राद्धबलिदानम् ॥११॥ॐ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।स्मरणादेव तद्विष्णोः संपूर्णं स्यादिति श्रुतिरिति पठित्वा श्राद्धसंपूर्णकामो विष्णुं स्मरेत्। श्राद्धीयवस्तूनि ब्राह्मणाय प्रतिपादयेत् ॥१२॥ अंभसि वा क्षिपेत्१३ ततः शेषं ज्ञातिभिः सह भुंजीत ॥१४॥ एवमेव पितृव्यभ्रात्रादि श्राद्धप्रयोगः ॥१५॥

की वस्तु ब्राह्मण को दे ॥१२॥ वा जल में छोड़ दे॥१३॥ शेष पक्वान्नादि जात भाई लोगों के साथ भोजन करै॥१४॥ इसी प्रकार

से चाचा भाई को भी श्राद्ध करने की विधि है ॥ १५ ॥ संग्राम में शस्त्र से मरे हुए के निमित्त कुआरं वदी पितृपक्ष की चतुर्दशी को ही एकोदिष्ट श्राद्ध करना साल पूरा होने पर उनका पिण्डदान नहीं देना इति ॥ १६ ॥

अथ मातृश्राद्धप्रयोग ॥ श्रीगणेशजी को विघ्ननाशार्थ नमस्कार करना ॥ १ ॥ फिर मध्यान्ह वेला में श्राद्ध

शस्त्रादिहतनिमित्तकमाश्विनकृष्णचतुर्दश्यामप्येकोद्दिष्टमेव कर्तव्यं तत्र सांवत्सरिक पदं परं न दातव्यमिति ॥ १६ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥१॥ अथ मातृश्राद्धप्रयोगः ॥ अथ शुक्लाम्बर स्नातो मध्यान्हे सुसमावृतः पंचगव्योपलेपितज्वलदंगारशोधितगौरमृत्तिकाच्छादितयथाप्रदेशासादित श्राद्धीयद्रव्यं तं देशमागत्य पादौ प्रक्षाल्याचम्य ॥२॥ सपिण्डस्त्रीद्वारापाचयेत् स्वयं

करने की जगह को गोबर, सपेद मृत्तिका से लिपवा कर पचगव्य प्रोक्षण करके बलते अंगारादि से शुद्ध करके श्राद्ध सामग्री सब रखवाय के फिर स्नान करके श्वेत वस्त्रोपवस्त्र धारण करके श्राद्ध स्थान पर आवे हाथ पाँव धोयके आचमन करे ॥ २ ॥ फिर अपनी स्त्री वा कुटुम्ब के द्वारा पिण्ड का पाक बनवावै या अपने हाथ करैं तब फिर हाथ पाँव धोयके पूर्वाभिमुख

शुद्ध कुशासन वा कम्बलासन पर बैठै आँचमन ३ प्राणायाम करके ॥ ३ ॥ रक्षा दीप बालना दूसरे कोई ने पाक किया होय तो उस्से पूछना कि पाक सिद्ध भया ॥ ४ ॥ तबे त्रिकुश जल लेकर श्राद्ध सामग्री पर प्रोक्षण करैं ॥ ५ ॥ और त्रिकुश जल

वा पचेत् ततः पादौ प्रक्षाल्याचम्य शुद्धासने उपविश्य ॥ ३ ॥ दीपं प्रज्वाल्याचम्य प्राङ्मुखः परकर्तृके पाके सिद्धमिति पाचिकां पृष्ट्वा ॥ ४ ॥ ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा । यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥ ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनात्वितिकुशत्रयजलैः श्राद्धीयद्रव्याणि सिंचयेत ॥ ५ ॥ ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय ॐ अद्यामुकमासीयामुकपक्षीयामुकतिथावमुकगोत्राया मातुरमुकदेव्याःसांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धमहंकरिष्ये इति संकल्पं कुर्यात ततो गायत्रीं त्रिर्जपित्वा देवताभ्यस्त्रिर्जपेत् ॥ ६ ॥ ततोऽपसव्यं कृत्वा पातितवामजानुर्दक्षिणाभिमुखो मोटकतिलजलान्यादाय ॐ अद्यामुकगोत्रे मातरमुकदेवि सांवत्सरिकैकोद्दिष्ट-

लेकर सङ्कल्प करना ३ वार गायत्री जँपना देवताभ्य मन्त्र जपना ॥ ६ ॥ फिर अपसव्य होकर वावाँ पैर मोड़के दक्खिन

मुख मोटक तिल जल लेकर सङ्कल्प करके मोटक रूप आसन दक्षिणाग्र कुशा तिल सहित धरदे ॥ ७ ॥ अपहता मन्त्र से अर्घ पात्रके बायें तरफ तिल छोड़ै और आयन्तु नः मन्त्र पढे ॥ ८ ॥ अर्घ पात्र में दक्षिणाग्र पवित्री धर शन्नो देवी मन्त्र

श्राद्धे इदमासनं ते स्वधेति मोटकरूपमासनं दक्षिणाग्रंसतिलमुत्सृजेत् ॥ ७ ॥ ततः ॐ अपोहताअसुरारक्षा ँ सिवेदिषद् इत्यर्घपात्रे वामावर्ततिलान्विकीर्य ॐ आयन्तु नः पितरः साम्यासोग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः । अस्मिन्यज्ञेस्वधयामदन्तोधिब्रुवन्तु तेवन्त्वस्मानिति पठित्वा ॥ ८ ॥ अर्घपात्रे दक्षिणाग्रं पवित्रेधृत्वा ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये ॥ शंय्योरभिस्रवन्तु नः इत्यर्घपात्रे जलंक्षिपेत् ॐ तिलोसि सोमदेवत्योगोसवोदेवनिर्मितः । प्रत्नमद्भिः प्रक्तः स्वधयापितॄँल्लोकान्प्रीणाहिनः स्वाहेति तिलान् क्षिप्त्वा गंधपुष्पे तूष्णीं क्षिपेत् ॥ ९ ॥ ततोऽर्घपात्रंवामहस्ते कृत्वा पवित्रं भोजनपात्रोपरि उत्तराग्रं धृत्वा तदुपरि किंचिदुदकांतरं दत्वा ॐ

से जल भरै तिलोसि मन्त्र से तिल अर्घ पात्र में छोड़ै और फूल चन्दन अमन्त्रक ही छोड़ै ॥ ९ ॥ फिर अर्घपात्र

की पवित्री भोजनपात्र पर उत्तराग्र रक्खै उसपर थोड़ा जल छोड़दे अर्घपात्र बायें हाथ में लेकर दहिनें हाथ से ढाके यादिव्या मन्त्र पढ़ै ॥ १० ॥ फिर दहिने हाथ में लेकर मोटक तिल जल सहित संकल्प करके भोजन पात्र पर रक्खी हुई पवित्री पर अर्घ का आधा जल गिरावै और उस पवित्री को अर्घ में धर के अर्घ पात्र को आसन के बाम

या दिव्याऽआपः पयसासंबभूवुर्य्याऽआंतरिक्षाऽउतपार्थिवीर्य्याः ॥ हिरण्यवर्णायज्ञियास्तानऽआपः शिवाः श ँ स्योनाः सुहवाभवन्तु इतिपठित्वा ॥ १० ॥ मोटकतिलजलान्यादाय ॐ अद्यामुकगोत्रे मातरमुकदेवि सांवत्सरिकैकोदिष्टश्राद्धे एष ते हस्तार्घः स्वधात अर्घ्यंददद्दुत्सृजेत् ततोऽवशिष्टजलसहितं पवित्रसहितं चार्घ्यपात्रमासनवामभागे ॐ मात्रेस्थानमसीति न्युब्जीकुर्य्यात् तच्च दक्षिणादानपर्यन्तं नोद्धरेत् न चालयेत् ॥ ११ ॥ ततो गंधादिदानं ॐ अद्यामुकगोत्रे मातरमुकदेवि सांवत्सरिकैकोदिष्टश्राद्धे एतानिगंधपुष्पधूपदीपतांबूलसिंदूरवासांसि ते दत्तानि ॥ १२ ॥ ततो

भाग में मात्रे स्थानमसि वाक्य से उलट के धर दे दक्षिणादान पर्यन्त उसको न उघारे न हटावे ॥ ११ ॥ चन्दन फूल धूप दीप ताम्बूल सिंदूर वस्त्र से मोटकरूप आसन की पूजा करै और उसका संकल्प करै ॥ १२ ॥ फिर जल से

भोजनपात्र सहित आसन के चारो तरफ मण्डल करै श्राद्धान्न का अग्रभाग तिलजल सहित दोनियाँ वगैरह में लेके इदमन्नमेतद्भूस्वामि पितृभ्यो नमः कहके भूस्वामि को दे ॥ १३ ॥ फिर ताम्रादिपात्र में रक्खा हुआ अन्न माता का ध्यान

जलेनासनसहितभोजनपात्रस्य चतुर्दिक्षु चतुष्कोणं मण्डलं कृत्वा सव्यंजनं श्राद्धदेयान्नाग्रभागं तिलजलसहितं कुत्रचित् पुटकादौ कृत्वा ॐ इदमन्नमेतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः इतिमोटकादिना भूस्वामिनेऽन्नमुत्सृजेत् ॥ १३ ॥ ततः कराभ्यां ताम्रपात्रस्थमन्नं मातरं ध्यायन्भोजनपात्रे पुरुषाहारत्तमं परिविष्य यथासंभवं सव्यंजनं घृतंपानीयं च पात्रांतरेषूपनीय मधुनान्नमभिघारयेत् यतः ॐ मधुवाताऋतायते मधुक्षरन्तिसिंधवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः । मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिवँ रजः । मधुद्यौरस्तु नः पिता । मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमाँऽ अस्तुसूर्य्यः । माध्वी

करके दोनों हाथों से भोजन पात्र पर १ पुरुष के आहार माफिक परोसे और जो भोजन पदार्थ तैयार हों सब साग भाजी चूर्ण पानी

मीठा इत्यादि गरोंसे तब मधुव्वातादि मन्त्र से मधु छोड़े ॥ १४ ॥ फिर बाया हाथ नीचे दहिना ऊपर करके दोनों हाथ से भोजन पात्रको स्पर्श कर और पृथिवीते पात्र मन्त्र पढ़ के दाहिने हाथ के अंगूठा से अन्न जल घृत फिर अन्नादि को

ग्गावो भवन्तु नः ॐ मधुमधुमध्विति च जपेत् ॥ १४ ॥ ततः पाणिभ्यां न्युब्जाभ्यां व्यस्ताभ्यां पात्रं स्पृशन् ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदं। समूढमस्यपा ᳪ सुरे स्वाहा ॐ कृष्णकव्यमिदं रक्षमदीयमिति पठेत् ततो दक्षिणहस्तमुत्तानं तदंगुष्ठं ॐ इदमन्नमित्यन्ने इमा आप इति जले ॐ इदमाज्यमिति घृते ॐ इदं हविरिति पुनरन्ने निवेशयेत् ॥१५॥ ॐ अपहताऽअसुरारक्षा ᳪ सिवेदिषदः इत्यन्ने तिलान् क्षिपेत् ततो मोटकादिन्यादाय ॐ अद्यामुकगोत्रे मातरमुकदेवि सांवत्सरिकैकोद्दिष्ट

दिखलाना ।। १५ ॥ अपहता मन्त्र से अन्न पर तिल छोड़ना मोटकादि लेकर सङ्कल्प करके अन्नहीन श्लोक पढके प्रार्थना करे

॥ १६ ॥ सव्य होके आचमन कर के ३ बार गायत्री जपे कुशासन पर बैठ कर मधुव्वाता ३ मन्त्र कृणुष्व पाजः इत्यादि पढके भूमि में तिल छोडे माता का ध्यान कर ॥ १७ ॥ उदीरतादि और पुरुष सूक्त आशुः अध्याय और पितृमन्त्र स्तोत्रादि का पाठ

श्राद्ध इदमन्नं सोपकरणं ते स्वधा इत्यन्नमुत्सृजेत् ततः पात्रंत्यजेत् ॐ अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत् । तत्सर्वमच्छिद्रमस्त्विति पठित्वा ॥ १६ ॥ सव्येनाचम्य गायत्रीं त्रिर्जपित्वा कुशेषूपविश्य ॐ मधुव्वातेति जपेत् । ततः कृणुष्वपाजइत्याद्याराक्षसोघ्नीर्ऋचो जपेत्तिलान्भूमौ विकीर्य्य मातरं ध्यात्वा ॥ १७ ॥ ॐ उदीरतामवरइत्यपि पित्र्यमन्त्रान्सहस्रशीर्षेत्यादिपुरुषसूक्तं ॐ आशुः शिशान इत्यादिकमप्रतिरथं अन्यांश्च मन्त्रान् जपेत् ततोऽपसव्यः उच्छिष्टसमीपे कुशत्रय-मास्तीर्य्य जलेन प्रोक्ष्य सव्यंजनमन्नं सघृतं सतिलजलप्रोक्षितमादाय ओं अनग्नि-दग्धा ये जीवा ये प्रदग्धाः कुले मम । भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यांतु परां गतिमिति

करना फिर भोजनपात्र के समीप ३ कुशा बिछा के जल से प्रोक्षण करके तरकारी सहित अन्न जल घृत तिल एक पात्रमें लेकर

अन.ग्नि दग्धा मन्त्र से कुशा पर अन्नादिक छोड़ दे ॥ १८ ॥ फिर अपसव्य होके वेदी बनाके अपहता मन्त्र से वेदी पर कुश मूलसे प्रादेशमात्र रेखा करना ये रूपाणि मन्त्रसे वेदी पर अंगार घुमाय के दक्षिण दिशा में रखदे फिर छिन्न मूल कुशा बिछावे

कुशोपरि अन्नमुत्सृजेत् ॥१८॥ ततः सव्यं कृत्वाचम्य हरिं स्मृत्वा गायत्रीं मधुव्वातेति च जपेत् अपसव्यं कृत्वा वेदिकां कृत्वा पिण्डस्थाने प्रादेशमात्रे ॐ अपहताऽअसुरारक्षाᳪ सिवेदिषदः इतिमंत्रेण दर्भपिंजूल्या उल्लिखेत् दर्भपिंजूलीमैशान्यां क्षिपेत् ततः ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः संतः स्वधयाचरन्ति । परापुरोनिपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्वस्मादिति मंत्रेण रेखायामंगारं भ्रामयित्वा दक्षिणस्यां दिशि त्यजेत् ततस्तिच्छिन्नमूलकुशानास्तीर्य्य ॥ १९ ॥ सव्य कृत्वा देवताभ्य इति त्रिर्जपेत् ॥ २० ॥ ततोऽपसव्यं कृत्वा पुटके जलतिल पुष्पगन्धनकृत्वा मोटकतिलजलान्यादाय ॐ अद्यामुकगोत्रे मातरमुकदेवि सांवत्सरिके

॥ १९ ॥ सव्य होके देवताभ्यः ३ वार जपै ॥ २० ॥ अप सव्य हो के १ दोनियाँ में तिल जल गन्ध पुष्प छोड़के संकल्प

करके वेदी पर अ.धा जल छोड़ना ॥ २१ ॥ तब तिल घृतादि मिलायके पिण्ड बनावे फिर मधु घृत ऊपरमें लेपन करके मोटक तिल जल लेकर संकल्प करके वेदी के कुश पर पिंड धरे ॥ २२ ॥ कुश मूल से हाथ पोंछे फिर सव्य हो के ६ आचमन करके

कोद्दिष्टश्राद्धे पिण्डस्थानेऽत्रावनेनिच्व ते स्वधेति छिन्नमूले कुशोपरि अवनेजनं दद्यात् ॥२१॥ ततस्तिलघृतसहितान्नेन पिण्डं कृत्वा मधुघृताभ्यामभिघार्य्य मोटक तिलजलपिण्डमादाय ॐ अद्यामुकगोत्रे मातरमुकदेवि सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे एष ते पिण्डः स्वधेति पिंडमपसव्येन गृहीत्वा दक्षिणहस्तेन कुशोपरि दद्यात् ॥२२॥ ततः कुशमूले करं प्रोच्छ्य सव्यं कृत्वा त्रिराचम्य हरिं स्मृत्वा ॥ २३ ॥ अपसव्यं कृत्वा दक्षिणाभिमुखः ॐ अत्रमातर्मादयस्वयथाभागमावृषायस्वेति पठेत् उदङ्मुखीभूय श्वासं निरुध्य मातरं ध्यायन्परिवर्तमानः ॐ अमीमदत्तमातायथाभागमावृषायिष्टेति

हरिका स्मरण करे ॥ २३ ॥ अपसव्य होके दक्षिण मुख बैठकर उत्तर मुख होके अत्र मातर मन्त्रसे श्वास खैंचकर माता का

ध्यान करके अमीमत्त मन्त्र से पिण्डके तरफ से छोड़े ॥ २४ ॥ फिर वेदी के आगे की दोनिया का बचा हुआ आधा जल

पठेत् ॥ २४॥ ततोऽवनेजनावशिष्टजलसहितं पुटकमादाय मोटकतिलजलान्यादाय
१४ ॐ अद्यामुकगोत्रे मातरमुकदेविसांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धपिण्डेऽत्र प्रत्यवने निद्व ते
स्वधा इति प्रत्यवनेजनं दद्यात् ततो नीवीं विस्रंस्य सव्यं कृत्वाऽऽचम्य॥२५॥ अपसव्यं
कृत्वा वामेन पाणिनोद्धृतं सूत्रं दक्षिणेन चादाय ॐ नमस्ते माता रसाय नमस्ते मातः
शोषाय नमस्ते मातर्जीवाय नमस्ते मातः स्वधायै नमस्ते मातर्मातर्नमस्ते गृहान्नो
मातर्देहिसतस्ते मातर्देष्म इति पठित्वा एतत्ते मातर्वास इति मंत्रेणपिंडोपरिसूत्रं
धृत्वा मोटकतिलजलान्यादाय ॐ अद्यामुकगोत्रमातरमुकदेवि सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्ध

संकल्प करके पिंड पर चढावे और कमर ढीली करदे सव्य होके आचमन करे ॥ २५ ॥ फिर अपसव्य होके बायें हाथ से सूत

लेकर दहिने हाथ से नमस्ते० मन्त्र पढ़ के पिंड पर चढावे और सूत्र दान का संकल्प करै ॥ २६ ॥ फिर पिंड पर गन्ध पुष्प धूप दीप ताबूल मन्त्र सहित चढावै भोजनपात्र पर जल पुष्प तदुलाक्षत छोडै और अक्षय्योदक दान करै ॥ २७ ॥ फिर सव्य

पिंडे एतत्ते वासः स्वधेति सूत्रमुत्सृजेत् ॥ २६ ॥ ततः पिंडे गंधपुष्पधूपदीपतांबूलानि तूष्णीं दत्वा ॐ शिवा आपः संत्विति जलं ॐ सौमनस्यमस्त्विति पुष्पं ॐ अक्षतं चारिष्टमस्त्विति तंडुलान्भोजनपात्रे निक्षिपेत् ततो मोटकतिलजलान्यादाय ॐ अद्यामुकगोत्राया मातुरमुकदेव्याः सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकम क्षय्यमुपतिष्ठतामित्यक्षय्योदकमुत्सृजेत् ॥ २७॥ ततः सव्यं कृत्वा दक्षिणाभिमुखः ॐ अघोरा मातारस्तु इति पिंडोपरि पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात् ततः पूर्वाभिमुखः कृतांजलिः ॐगोत्रं नो वर्धतां दातारो नोऽभिवर्धतांवेदाः संततिरेवच। श्रद्धाच नोमाव्यगमद्बहुदेयंच नोऽस्तु अन्नवनो बहुभवेदतिथींश्च लभेमहि याचितारश्च नः संतु माचयाचिष्म कंचन।

होकर दक्षिणमुख बैठकर पश्चिम से पूर्वान्त पिण्ड पर जलधारा दे पूर्वाभिमुख होके गोत्रन्नो पढके माता से आशीर्वाद ले

॥ २८ ॥ फिर अपसव्य होके सपवित्र तीन कुशा पिण्ड पर रखके ऊर्जं वहन्ती मन्त्र से दक्षिणाग्र जलधारा दे ॥ २९ ॥ और शुक्र के पिण्डको सूत्र के उठाय दें पिण्ड के नीचे की कुशा अग्नि में छोड दे उलटा अर्घपात्र को सीधा करदे दक्षिणा दान करे

एताः सत्या आशिषः संतु इत्याशीःप्रार्थना कुर्य्यात् ।२८॥ ततोऽपसव्यं कृत्वा सपवित्र कुशत्रयं पिंडोपरि आस्तीर्य ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृत घृतं पयः कीलालं परि स्रुतं स्वधास्थतर्पयतमे मातरमिति कुशोपरि दक्षिणाग्रां जलधारां दद्यात् ॥ २९ ॥ ततो नम्रीभूय पिण्डमाघ्रायोत्थापयेत् पिण्डाधारकुशानुल्मुकं च वह्नौ निक्षिप्यार्घपात्रमुत्तानीकृत्य दक्षिणां दद्यात् । ततो मोटकतिलजलान्यादाय ॐ अद्यामुकगोत्राया मातुरमुकदेव्याः सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिदं रक्तिकापरिमितं रजतं चंद्रदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे इति यथा वैभवं दद्यात् ॥ ३० ॥ ॐ अभिरम्यतामिति विसर्जनम् ततः सव्यं कृत्वा ॐ देवताभ्य इति त्रिर्जपेत्

जैसी शक्ति हो उसी माफिक दक्षिणा दे ॥ ३० ॥ अभिरम्यताम् वाक्य से ? आचमनी जल मोटक रूप आसन पर छोड़ के

बिसर्जन कर फिर सव्य होके देवताभ्यो ३ वार पढ़े ॥ ३१ ॥ अपसव्य होके दोनो हाथों से रक्षादीप बुतावे हाथ पैर धो डाले ॥ ३२ ॥ फिर सव्य होके आचमन करै और विष्णु का स्मरण करै ॥ ३३ ॥ श्राद्ध की चढ़ी सामग्रीं ब्राम्हण को दे अथवा जल

॥ ३१ ॥ ततोऽपसव्यं कृत्वा हस्ताभ्यां दीपं निर्वाप्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य ॥ ३२ ॥ सव्येनाचम्य ॐ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् । स्मरणादेव तद्विष्णोः संपूर्णं स्यादिति श्रुतिरित्युक्त्वा श्राद्धसंपूर्णकामो विष्णुं स्मरेत् ॥ ३३ ॥ ततः श्राद्धीयवस्तूनि ब्राह्मणाय प्रतिपादयेत् जले वा क्षिपेत् ॥ ३४ ॥ तत इष्टैः सह शेषभोजनं ॥ ३५ ॥ एवंपत्न्यादिश्राद्धम् ॥ ३६ ॥

पत्न्यादिसंबन्धिनाम्न उल्लेखे विशेषः यथा स्त्रीकर्तृकश्राद्धप्रयोगः ॥ स्नाता

में छेड़दे ॥ ३४ ॥ ब्राम्हण भोजन के बाद अपने इष्ट मित्र सहित भोजन करे ॥ ३५ ॥ इसी प्रकार से पत्नी पितृव्यपत्नी अर्थात् चाची और सापत्न माता याने सौतेली माता आदि का भी श्राद्ध करना ॥ ३६ ॥

अथ स्त्रीकर्तृक श्राद्धप्रयोग ॥ स्त्री अपने पति अथवा पुत्र का श्राद्ध भी इसी प्रकार से करे स्नान करके सफेद वस्त्रोपवस्त्र

धारण करके स्वच्छ मनसे मध्यान्हमें पचगव्यसे लिपी और जलते अंगार से शुद्ध श्वेतमृत्तिका से आच्छादित भूमि में श्राद्ध सामग्री रखके रक्षादीप बारके पीली सरसों छोड़ कर श्राद्ध करने की जगह पूर्व बैठ कर आचमन करे ॥ १ ॥ पाक बनाने

शुक्लवस्त्रयुगधारिणी मध्याह्ने सुसमावृतं पंचगव्योपलेपितं ज्वलदंगारशोधितं गौरमृत्तिकाच्छादितं यथा प्रदेशासादितश्राद्धीयद्रव्यं ज्वलितदीपं विकीर्णतिलगौरसर्षपं श्राद्धदेशमागत्याचम्यासने प्राङ्मुखी उपविशेत् ॥ १ ॥ पाचिकांतरपक्षे सिद्धमिति पाचिकां पृच्छेत् अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ॥ यःस्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स वाह्याभ्यंतरः शुचिः पुण्डरीकाक्षः पुनात्विति कुशत्रयजलेन श्राद्धीयद्रव्याणि सिंचेत ॥ २ ॥ ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय अद्यामुकगोत्रस्य पत्युरमुकशर्मणः सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धमहंकरिष्ये इति संकल्पयेत् ततः देवताभ्य इति त्रिर्जपेत् ततो दक्षिणाभिमुखः पातितवामजानुर्मोटकतिलजलान्यादाय अपस० अद्यामुकगोत्र पतेऽमुकश

वाले से पाक भया पूछकर अपवित्र मन्त्र से त्रिकुश लेकर जल से श्राद्धथि द्रव्य पर सिंचन करे ॥२॥ ३ कुश तिल जल लेके

मोदकरूप आसन दे ॥ ३ ॥ मन्त्र सहित भोजनपात्र पर तिल छोड अर्घपात्र में पवित्र जल तिल सुगन्ध पुष्प छोडकर अर्घपात्र हाथ में करके पवित्री निकाल कर भोजन पात्र पर उत्तराग्र रखके उस पर किंचित् जल देके फिर दहिने हाथ से दोनिया ढाक

मन्त्र सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे इदमासनं ते नमः इतिपितृतीर्थेनमोटकरूपमासनमुत्सृजेत् ॥३॥ ततस्तूष्णीं भोजनपात्रे तिलान् प्रक्षिप्य अर्घपात्रे पवित्रधारणं जलप्रक्षेपस्तिलगंधपुष्पप्रक्षेपणं च ततोऽर्घपात्रं वामहस्ते कृत्वा पवित्रमुत्तराग्रं भोजनपात्रे धृत्वा तदुपरि किंचिदुदकांतरं दत्वा मोटकादीन्यादाय अद्यामुकगोत्रपतेऽमुकशर्मन् सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे एष ते हस्तार्घो नम इत्यर्घं पवित्रे परि ददुदुत्सृजेत् ॥ ४ ॥ ततोऽवशिष्टजलं पवित्रसहितमर्घपात्रमासनवामभागे पत्येस्थानमसीति न्युब्जीकुर्यात् ॥ ५ ॥ ततो गन्धादिदानम् मोटकतिलजलान्यादाय अद्यामुकगोत्रपतेऽमुकशर्मन् सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलयज्ञोपवीतवासांसि ते नमः

के या दिब्या मन्त्र पढ कर सकल्प मोटकादि रेक छोड्ना ॥ ४ ॥ पवित्री पर आधा जल गिराय के फिर अर्घा में पवित्री धर के

शेप जल सहित आसन के वाम भाग में पत्ये १ पुत्रे २ आत्रे ३ स्थानमासि इत्यादि वाक्य कह के अर्घपात्र उलट दे ॥ ५ ॥
फिर आसन पर गन्धादि से पूजन करके उसके संकल्प करे और जल से आसन सहित भोजनपात्र का मण्डल करे ॥ ६ ॥ १ ॥

ततो जलेनासनसहितं भोजनपात्रं मण्डलेन वेष्टयेत् ॥६॥ श्राद्धीयान्नाग्रभागं सव्यंजनं सतिलजलं पुटकादौ कृत्वा मोटकादीन्यादाय इदमन्नमेतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः इति भूस्वामिनेऽन्नंदद्यात् ॥ ७ ॥ ततस्ताम्रपात्रस्थितमन्नं कराभ्यामादाय पतिं ध्यायती परिवेषयेत् जलघृतव्यंजनं पुटकांतरस्थं तच्चोपनीय अन्ने मधु दत्वा मधुमधुमध्विति च जपेत् ॥ ८ ॥ तत उभाभ्यां व्यस्ताभ्यां हस्ताभ्यां भोजनपात्रमालभ्यान्नममृततया चिन्तयेत् कृष्णकव्यमिदं रक्ष मदीयमिति पठित्वा दक्षिणहस्तमुत्तोल्य

दोनियां में श्राद्धान्न भाजी घृतादि सहित लेकर मोटकादि लेके भूस्वामि पितरों को दे ॥ ७ ॥ फिर ताम्रादि में रक्खी वस्तु दोनों हाथों से भोजन पात्र पर पतिका ध्यान करके परोसे जल घृत . तरकारी दोनियां वगैरह में परोसे अन्न पर मधु छोड़ें मधु ३ बार कहे ॥ ८ ॥ फिर दोनों हाथों से भोजनपात्र छूवे कृष्णकव्यमिदं रक्षमदीयमित्यादि पढ़े दहिने हस्त के अगुए से अक्षत १

जल २ घृत ३ ॥ विष्यान्नादि देखावे अन्न पर तिल छोड़े अन्नदान करे अन्नहीनं इत्यादि पढ़े ॥ ८ ॥ भूमिमें तिल छोड़े कुशासन पर बैठ कर नीले कण्ठवाले शिवका ध्यान कर रुचिस्तोत्रादि पढ़े, अशक्त हो तो नमस्तुभ्य मन्त्र पढ़े ॥ १० ॥ भोजनपात्र के समीप

तदंगुष्ठमिदमन्नं इमा आपः इदमाज्यमित्यन्नजलघृतेषु निक्षिप्य इदं हविरिति पुनरन्नेऽङ्गुष्ठं निक्षिप्य अन्नोपरि तिलान्विकीर्य्य मोटकादीन्यादाय अद्यामुकगोत्र पते ऽमुकशर्म्मन् सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे इदमन्नं सोपकरणं ते नम इत्यन्नमुत्सृजेत् ततो वाममप्युत्तोल्यान्नहीनमित्यादि पठित्वा ॥ ९ ॥ ततो भूमौ तिलान् विकीर्य्य दर्भेषू पविश्य नीलकंठस्तुतिरुचिस्तवादीनि पठेत् अशक्तौ नमस्तुभ्यं विरूपा क्ष इति श्लोक मपि पठेत् ॥ १० ॥ तत उच्छिष्टसन्निधावास्तृतकुशत्रयां भूमिं प्रोक्ष्य सतिलजलप्रो क्षितं सव्यं जलघृतमन्नमादाय अनग्निदग्धा पठित्वा कुशोपरि कुशादिना विकिरेत् ॥ ११ ॥ तत आचम्य हरिं स्मृत्वा दक्षिणामुखो पिण्डस्थाने प्रादेशमात्रं परिमाय

१ कुशा बिछाव के जल छिड़िक के १ दोनियों में अन्न जल तिल घृतादि लेकर अनाग्निदग्धा पढ़कर कुशा पर छींटदे ॥ ११ ॥

फिर आचमन करके विष्णु का स्मरण कर दक्षिणमुख होके वेदी बनाय के प्रादेशमात्र की रेखा करके कुशा फेंक दे ॥ १२ ॥ फिर वेदी पर अँगार घुमाय के कुशा बिछावे पूरब मुख बैठकर देवताभ्य ३ बार पढ़े ॥ १३ ॥ दक्षिण मुख होकर १ दोनियों

करद्वयतजन्यंगुष्ठधृततन्मूलया दर्भपिंजुलया तदुल्लिख्य दर्भपिंजुलीमुत्तरतः क्षिपेत् ॥ १२ ॥ ततस्तत्र ज्वलदंगारं भ्रामयित्वा दक्षिणस्यां क्षिपेत् ततस्तत्र छिन्नमूलकुशत्रयमास्तीर्य प्राङ्मुखो देवताभ्य इत्यादि त्रिः पठेत् ॥ १३ ॥ ततो दक्षिणमुखो पुटके तिलजलगंधपुष्पाणि कृत्वा पाणिना मोटकादीन्यादाय अद्यामुकगोत्रपतेऽमुकशर्मन् सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे पिण्डस्थानेऽत्रावनेनिक्ष्व ते नम इति कुशोपरि अवनेजनं दद्यात् ॥ १४ ॥ अद्यामुक गोत्रपतेऽमुकशर्मन् सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे एष ते पिंडो नम इत्यवनिक्तकुशोपरि

में गन्ध पुष्प तिल जल छोड़ के मोटकादि लेकर संकल्प करके वेदी पर के कुशापर दोनियोंका आधा जल गिरावे ॥ १४ ॥ फिर

पिण्ड दानकरै ६ आचमनकरै उत्तर मूख होके श्वास खैंच कर पिण्ड पर छोडै तब फिर दोनियों का बचा आधा जल का प्रवत्य-

वामान्वारब्धदक्षिपाणिना पिंडं दद्यात् ततो द्विराचम्य हरिं स्मृत्वा दक्षिणामुखी तत उत्तराभिमुखी भूय श्वासं नियम्य पतिं ध्यायंती दक्षिणामुखी भवेत् ततो दत्तावशिष्टजलयुतमवनेजनपात्रं मोटकादीनि चादाय अद्यामुकगोत्र पतेऽमुकंशर्मन् सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धपिंडेऽत्रप्रत्यवने निक्ष्व ते नम इति प्रत्यवनेजनं दद्यात् ॥१५॥ अद्यामुकगोत्रपतेऽमुकशर्मन् सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धपिण्डे एतत्तेवासो नम इति मोटकादिना सूत्रमुत्सृजेत् ततः पिण्डे गंधादिदानम् ततः शिवा आपःसंत्विति जलं सौमनस्यमस्त्विति पुष्पम् अक्षतं चारिष्टमस्त्विति तंडुलान्भोजनपात्रे प्रक्षिप्य मोटकादीन्या-

नेजन दान करै ॥ १५ ॥ फिर पिण्ड पर सूत्र चढावे सूत्र दान करै पिण्ड पर गन्धादि दान करै भोजनपात्र पर जल फुल

अक्षत छोड़ अक्षय्योदक दान करै ॥ १६ ॥ सव्य होके पिण्ड पर पूर्वाग्र जलधारा दे गोत्रन्नो वर्द्धन्ताम् इत्यादि अंजलि करके पढै

दाय अद्यामुकगोत्रस्य पत्युरमुकशर्मणः सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिक-
मक्षय्यमुपतिष्ठतामित्यक्षय्योदकं दद्यात् ॥ १६ ॥ ततः पिंडोपरि अघोरः पितरस्त
इति पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात्ततः कृतांजलिः गोत्रं नो वर्द्धतामित्यादि पठित्वा एताः
सत्याः आशिषः सन्त्वित्याशिषः प्रार्थयेत् ॥ १७ ॥ ततः पिण्डोपरि दक्षिणामुखी
सपवित्रकुशत्रयं दक्षिणाग्रामास्तीर्य तदुपरि दक्षिणाग्रां जलधारां दद्यात् ततो नम्री-
भूय पिंडमाघ्रायोत्थापयेत् ॥ १८ ॥ पिंडाधारकुशानुल्मुकं च वन्हौ क्षिपेत् ततोऽर्घ-
पात्रमुत्तानीकृत्य दक्षिणादानं अद्यामुकगोत्रस्य पत्युरमुकशर्मणः कृतैतत्सांवत्सरिकै-

आशीष ले ॥ १७ ॥ फिर पिण्ड पर अपसव्य से दक्षिणाग्र जलधारा पवित्री कुशा रख के नम्र होके पिंडाघ्राण करके उठावै

॥ १८ ॥ आधा कुशा उल्मुकाग्नि में छोड़े अर्घपात्र उघार के दक्षिणा रजत दान करै अभिरम्यताम वाक्यसे विसर्जन करै ॥ १९ ॥

कोद्दिष्टश्राद्धप्रतिष्ठार्थं शक्तिकापरिमितं रजतं चन्द्रदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे इति दक्षिणां दद्यात् ततोऽभिरम्यतामिति विसर्जनम् ॥ १९॥ ततः प्राङ्मुखो देवताभ्य इति त्रिः पठेत् ततो दक्षिणामुखो हस्ताभ्यां दीपं निर्वाप्य ततः हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य प्रमादात्कुर्वतामित्यादि पठित्वा श्राद्धसंपूर्णकामतया विष्णुं स्मरेत् ततः श्राद्धीयवस्तु ब्राह्मणायार्पयेत् अंभसि वा क्षिपेत् तत इष्टैः सह भोजनम् ॥ २० ॥ शेषः शास्त्रादिहतनिमित्तकेऽपि एकोद्दिष्ट एष एव प्रयोगः सांवत्सरिकपदं तत्र न दातव्यं ॥ २१ ॥ तद्यथा आश्विनकृष्णचतुर्दश्यां तिथावमुकगोत्राय

फिर सव्य से देवताभ्य. आदि मन्त्र से विष्णुस्मरण करै रक्षादीप बुतावै हाथ पाव धोके आचमन करके श्राद्धीयवस्तु ब्राह्मण को दे

वा जलमें छोड दे ब्राह्मण भोजन के बाद कुटुंव सहित भोजन करे इति स्त्रीकर्तृक श्राद्धविधिः ॥ २० ॥ शास्त्रादि से मरे हुवे का भी इसी विधिसे एकोद्दिष्ट करना ॥ २१ ॥

मातुरमुकदेव्या एकोद्दिष्टश्राद्धमहं करिष्ये इति संकल्पं कुर्यात् ॐ अद्यामुकगोत्रे मातरमुकदेवि एकोद्दिष्टश्राद्ध इदमासनं ते स्वधा इत्येवमाद्युत्सर्गवाक्यम् ॥ इति रुद्रधरकृतश्राद्धविवेके सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धप्रयोगः समाप्तः ॥

इति रुद्रधरकृतश्राद्धविवेके सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धप्रयोगः समाप्तः ॥

बाबू काशीप्रसाद भार्गव द्वारा भार्गवभूषण प्रेस, काशी में मुद्रित।

इति

सांवत्सरिकैकोद्दिष्टश्राद्धप्रयोगः भा.टी.

समाप्तः